



ब्रह्माकुमारीज ओम शांति रिट्रीट सेंटर

'करुणा और दया के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' में शरीक हुए केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में 'करुणा और दया के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' वार्षिक थीम के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते

अपनाया है। सबको शरण दी है। भारत की संस्कृति 5000 वर्ष पुरानी है। भारत ने ही विश्व को आदर्शों और मूल्यों का ज्ञान दिया है। उन्होंने आगे कहा कि इंसान सामूहिक रूप से रहता है। हमारे शास्त्रों में विश्व को

ज्ञान से ही हम इन बुराइयों से मुक्त हो सकते हैं। ओ.आर.सी. निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि करुणा और दया जैसे मूलभूत गुणों की जागृति से ही मानव, मानव से जुड़ सकता है। राजयोगिनी



हुए केरल के राज्यपाल माननीय आरिफ मोहम्मद खान ने कहा कि यहां पर बिताए हुए पलों को शब्दों के द्वारा अभिव्यक्त करना बहुत मुश्किल है। आध्यात्मिक ऊर्जा और शांति के प्रकम्पन मन को शक्तिशाली बना देते हैं। उन्होंने कहा कि स्वर्णिम विश्व के निर्माण में करुणा और दया का भाव ज़रूरी है। कोई भी इंसान बगैर प्रेम के नहीं रह सकता, लेकिन वही प्रेम जब योग के माध्यम से परमात्मा से जुड़ जाता है तो करुणा और दया का संचार होता है। ज़रूरत है तो सिर्फ अपने आदर्शों के प्रति वफादारी की। राज्यपाल ने कहा कि भारत हमेशा से ही ज्ञान और प्रज्ञा का केन्द्र रहा है। भारत ने सर्व धर्म समभाव की धारणा को

एक परिवार माना गया है। इन सबका आधार वास्तव में आत्मिक भाव है। ब्रह्माकुमारीज सही अर्थों में आज वही कार्य कर रही है। मानवता को आत्मिक बोध करा

माननीय राज्यपाल ने 'कल्प तरु' अभियान के तहत पौधारोपण भी किया

रही है। ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने कहा कि दुःख का असली कारण जीवन में पाँच विकारों का प्रभाव है। आध्यात्मिक

ब्र.कु. चक्रधारी दीदी ने कहा कि करुणा और दया आत्मा में मानव और प्रकृति के प्रति कल्याणकारी भाव पैदा करते हैं। बीएमएल मुंजाल विश्व विद्यालय के कुलपति मनोज के. अरोड़ा ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि शिक्षा में आध्यात्मिकता को जोड़ना ज़रूरी है। जी.डी. गोंयका विश्व विद्यालय के कुलपति डॉ. तबरेज अहमद ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था चरित्र निर्माण का असली कार्य कर रही है। असली सुख आध्यात्मिक जीवन में है न कि भौतिक साधनों के संग्रह में। ब्र.कु. सुनैना बहन ने सभी को गहन राजयोग की अनुभूति कराई। संचालन ब्र.कु. हुसैन बहन ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

शारीरिक स्वास्थ्य के साथ आध्यात्मिक स्वास्थ्य से होगी सम्पूर्ण स्वास्थ्य की परिकल्पना साकार



नरसिंहपुर-म.प्र.। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज द्वारा राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस पर चिकित्सकों एवं चिकित्सा कर्मियों के सम्मान में आयोजित समारोह में मुख्य जिला चिकित्सा अधिकारी डॉ. ए.के. जैन ने कहा कि लोग हमें भगवान की उपाधि देते हैं, लेकिन भगवान तो भगवान है। जब स्वास्थ्य के क्षेत्र में हम हार मान जाते हैं तो हम भी उस भगवान की ही शरण में जाते हैं। ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. कुसुम दीदी ने स्वास्थ्य की परिभाषा बताते हुए कहा कि सम्पूर्ण स्वास्थ्य केवल शारीरिक स्वास्थ्य नहीं अपितु मानसिक स्वास्थ्य, पारिवारिक स्वास्थ्य, सामाजिक स्वास्थ्य और आध्यात्मिक स्वास्थ्य, जब ये सब हो तब ही सम्पूर्ण स्वास्थ्य कहेंगे। ब्र.कु. प्रीति बहन ने सभी डॉक्टरों को राजयोग का महत्व बताते हुए राजयोग की गहन अनुभूति कराई। मेडिकल स्पेशलिस्ट डॉ. संजीव चांदोरकर भी अपने विचार रखे। अंत में सभी डॉक्टरों को परमात्म वरदान कार्ड एवं सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस पर विंध्य क्षेत्र के चिकित्सकों को ब्रह्माकुमारीज द्वारा किया गया सम्मानित

मानवता के दुःख, दर्द का निवारण करते हैं डॉक्टर

चिकित्सकों ने एक-एक पेड़ लगाकर धरती को हरा-भरा बनाने का लिया संकल्प

रीवा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा राष्ट्रीय डॉक्टर दिवस पर विंध्य क्षेत्र के वरिष्ठ चिकित्सक विद्वानों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी ने कहा कि डॉक्टर को भगवान का दूसरा दर्जा देते हैं। मानव को सुखी बनाने में चिकित्सक वर्ग का बहुत बड़ा योगदान है। डॉ. संजीव शुक्ला, उपसंचालक, स्वास्थ्य सेवाएं रीवा ने कहा कि समाज को सदाचारी और सुखी बनाने में इस संस्था का महत्वपूर्ण योगदान है। डॉ. अवतार सिंह, प्राध्यापक एवं अधीक्षक, संजय गांधी हॉस्पिटल रीवा ने कहा कि मानवता की सेवा में ब्रह्माकुमारीज की सेवाएं बहुत ही महत्वपूर्ण और उपयोगी हैं। डॉ. के. के. परोहा, वरिष्ठ समाजसेवी एवं सेवानिवृत्त अधीक्षक, संजय गांधी हॉस्पिटल रीवा ने कहा कि समाज को सदाचार, मूल्य निष्ठ एवं योग युक्त मूल्यों से परिपूर्ण बनाने में इस

संस्थान का अतुलनीय योगदान है। इस अवसर पर ब्रह्मचारी विजय शंकर महाराज एवं ब्रह्मचारी गौरव तिवारी, महंत, पंचमठ आश्रम रीवा ने अपने माउंट आबू यात्रा के विशिष्ट अनुभव को साझा किया। आरंभ में विंध्य क्षेत्र के लोकप्रिय गीतकार नीलेश श्रीवास्तव एवं साथी गीतकार

अग्रवाल, डॉ. पद्मावती पांडे, डॉ. एच.के. पांडे, डॉ. सोनल अग्रवाल, वाय.एस. बघेल, डॉ. शैलजा सोनी, डॉ. निशा गुप्ता, डॉ. विभांशु दुबे, डॉ. रिचा सिंह, डॉ. आर.पी. मिश्रा, डॉ. आदित्य कुमार तिवारी, डॉ. शैलेंद्र कुमार सोनी, डॉ. विनी शराफ, डॉ. शैलजा सोनी, डॉ. विकास



सुनील भारती ने सुंदर गीतों की प्रस्तुति देकर उपस्थित चिकित्सकों को परमात्म रंग में रंग दिया और अपने गीतों के माध्यम से सभी चिकित्सकों का भावपूर्ण सम्मान किया। इस मौके पर डॉ. पंकज चौधरी, डॉ. विद्या भूषण सिंह, डॉ. एल.एम. कुशवाहा, डॉ. भास्कर रेड्डी, डॉ. अतुल झा, डॉ. आदेश पाटीदार, डॉ. सोनल

श्रीवास्तव, अतुल कुमार, हाजी ए.के. खान, डॉ. आर.एन. नामदेव, डॉ. संतोष सोनी, डॉ. मंदाकिनी साहू, डॉ. सरोज सोनी आदि चिकित्सकों को सम्मानित किया गया। इस सम्मान समारोह के दौरान चिकित्सकों ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए एक-एक पेड़ लगाकर धरती को हरा-भरा बनाने का संकल्प लिया।

परमात्म ऊर्जा का केन्द्र है शांतिवन : केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत

शांतिवन-आबू रोड। 'सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्' इस बीज मंत्र के माध्यम से वर्तमान युग में करोड़ों लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने और इस सहज राजयोग के माध्यम से परमतत्व के साथ साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त करने वाले परमपिता शिव और इस पवित्र धरती को मैं प्रणाम करता हूँ। मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि बहुत देर से ही सही लेकिन आज इस पुनीत स्थल पर आप सबके बीच में आने का अवसर मिला है। अनेक वर्षों से मेरे मन में ये था कि मुझे एक बार अवश्य इस पवित्र स्थान पर जाकर यहाँ पर व्याप्त ऊर्जा को अनुभव करना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज के साथ मेरा सतत् सम्पर्क रहा है। मेरे बाल्यकाल में जब मैं विद्यालय में पढ़ता था उस समय भी मेरी



जगह जहाँ अनेक-अनेक लोग पिछले इतने वर्षों में आत्मा के परमात्मा के साथ जुड़ाव के रास्ते पर इतना आगे बढ़े हों, निश्चित ही उस जगह से सृजित ऊर्जा का प्रभाव न केवल वहाँ के वातावरण और वायुमण्डल पर अपितु वहाँ के पर्वत, जंगल, पानी, पेड़, पौधे सब पर पड़ता है।

आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत ब्रह्माकुमारीज ने तीन माह में 15000 कार्यक्रमों का लक्ष्य किया हासिल

कल्प तरु परियोजना के तहत पर्यावरण के संरक्षण हेतु संस्थान ने लगाये 7500000 पौधे

माता जी ब्रह्माकुमारी बहनों के सम्पर्क में थीं। उस समय से ही इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साथ में मेरा जुड़ाव रहा है। इस स्थान पर आकर निश्चित ही एक अद्वितीय ऊर्जा का अनुभव होता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके जीवन में परमतत्व के साक्षात्कार तथा एकाकार से ऊर्जा उत्पन्न होती है। जिस जगह पर आत्मा का परमात्मा से मिलन हुआ हो, ऐसी

यहाँ अभी मैं बाबा के महावाक्य 'मुरली' सुन रहा था, उसमें एक वाक्य आया कि आसक्ति जो जुड़ाव है वो हमें भटकाव के रास्ते पर ले जाता है। उस भटकाव से मुक्त करके लाखों-लाखों के जीवन को उस परमतत्व की तरफ ले जाने के इस केन्द्र ने और निश्चित रूप से इस मार्ग ने भारत की संस्कृति का प्रकीर्णन न केवल देश बल्कि समस्त विश्व भर में किया।

वर्तमान समय की चुनौतियां और समाधान

अपने पास खजाने का सिर्फ उपयोग करना ही नहीं किन्तु उचित समय पर, उचित खजाने को यूज करने की कला आ जाये तो हम कैसी भी चुनौतियों को अवसर में बदल कर सफल हो सकते हैं। उसके लिए हमें हर वक्त उसे धारदार बनाना है जैसे किसी औजार को धारदार बनाया जाता है ना!

बाबा ने प्रतिदिन हम बच्चों को ज्ञान मुरलियों में अनेक रूप से चुनौतियां क्या-क्या आयेगी, समय अनुसार उसके लिए भी सावधान किया है और कैसे उन चुनौतियों को पार करना चाहिए, उसके उपाय क्या हैं, ये उपाय भी हमें मुरलियों में स्पष्ट बताये हैं। लेकिन फिर भी वर्तमान समय के हिसाब से अगर देखा जाये तो समय बहुत तीव्रगति से आगे बढ़ रहा है। इसीलिए अंतिम समय की ओर... जैसे ये समय भाग रहा है ऐसे अनेक आत्माओं के अंतिम हिसाब-किताब भी समय से पहले खत्म होने ही चाहिए। तो इसीलिए बाबा ने हमको पहले से सावधान किया था कि 'बच्चे चारों ओर से पेपर आयेंगे' और वो चारों ओर से जो पेपर आयेंगे यही पेपर तो चुनौतियां हैं। कभी कौन-सी चुनौती सामने आयेगी, कभी कौन-सी चुनौती सामने आयेगी। इन चुनौतियों के आधार से हमें उसको पार करने की विधि जो बाबा ने बताई है, मैं विशेष उन पर अटेन्शन खींचवाऊँगी क्योंकि ये तो जरूर है कि समय के हिसाब से हर एक की चुनौती तो अपनी-अपनी होती है। उन चुनौतियों के विस्तार में अगर हम जायेंगे तो चुनौतियों की कभी समाप्ति होनी नहीं है। किसी के पास शारीरिक हिसाब की चुनौती आती है, किसी के पास वर्तमान समय में धन की चुनौती आती है। किसी के पास मन की चुनौती आती है। क्योंकि आज मानसिक परेशानियाँ इतनी बढ़ती जा रही हैं। कई प्रकार की बीमारियाँ

और वो भी खास करके मानसिक तौर की बीमारियाँ।

चाहे तन हो, मन हो, धन हो, तीनों से अलग-अलग। इसी तरह समय की अपनी चुनौती होती है, परिस्थितियों की अपनी चुनौती होती है तो इसलिए ज्ञान का प्रैक्टिकल एप्लीकेशन, जहाँ पर जो ज्ञान की बातें विशेष रूप से यूज कर सकें, उल्टा



डॉ. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

न कर दें। कभी किसी के घर में किसी व्यक्ति की टांग टूट जाये और हम कह दें कि ड्रामा बहुत कल्याणकारी है तो उल्टा हो जायेगा ना! इसे हम अंदर में ही समझ सकते हैं कि इसमें जरूर कोई कल्याण समाया होगा। और इसी भाव को लिए हुए उसकी प्यार से सेवा करें। उस सेवा से उनका हृदय पिघल सकता है। और वो बाबा कि ओर आगे आयेगा। बाकी अगर उसके मुँह पर ही कह दें कि आपकी टांग टूटी इसमें बहुत कल्याण है तो ज्ञान सुनने वाला होगा तो भी क्या कहेगा? आपका ज्ञान ऐसा

है जो सहानुभूति के बजाय और ही किसी को चोट पहुँचाये! भावार्थ ये है कि उस समय उसको आत्मरूप में देख करके आत्मा के प्रति सबसे बड़ी सम्पत्ति जो बाबा कहते हैं जो आपके पास है, वो सम्पत्ति है सहानुभूति की। उस समय उस आत्मा की प्यार से सेवा करें तो कई प्रकार के जो बंधन हैं वो समाप्त हो जायेंगे और सरलता से उनके मन में भी ये भावना जागृत होगी, जिससे वो भी पिघल जायें और देखने वाले भी पिघल जायें। इतनी सेवा तो इस दुनिया के अन्दर और कोई नहीं कर सकते। ये ब्रह्माकुमारियों का ज्ञान जो है, दिल की सेवा की भावना को जागृत करता है। तो जब आत्मिक रूप से देखेंगे, उसकी सेवा करेंगे तो कई प्रकार के बन्धन धीरे-धीरे समाप्त होते जायेंगे, क्योंकि आने वाले समय में हो सकता है यही बंधन यदि विकराल रूप लेगा तो बहुत बड़े विघ्न या चुनौती आपके सामने होगी।

इसलिए प्यार से, आत्मिक भावना से, आत्मिक वृत्ति से उसको देखते हुए, शुभभावना-शुभकामना प्रवाहित करते हुए, निःस्वार्थ भाव, बिना किसी अपेक्षा के हम सेवा करें और फिर उसका रिजल्ट देखो। इसी तरह जीवन के अन्दर कोई साइडसीन आ जाये लेकिन वो साइडसीन हमें चुनौती महसूस हो रही हो, ऐसे समय पर ड्रामा का ज्ञान यूज करो कि ये भी ड्रामा का एक हिस्सा है। और उसको समझते हुए- इसमें भी कोई कल्याण समाया हुआ है।



हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा श्रीराम गार्डन में आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शांता बहन, ब्र.कु. मीना बहन, ब्र.कु. श्वेता बहन, इंजीनियर संजय सिंह, ब्र.कु. दिनेश भाई, जनमंच के संयोजक एवं वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश कुमार शर्मा तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे। इस दौरान ब्र.कु. शांता बहन ने ऊर्जा एवं वैकल्पिक ऊर्जा राज्यमंत्री सोमेन्द्र तोमर से मुलाकात कर उन्हें ईश्वरीय संदेश दिया एवं ईश्वरीय स्मृति चिह्न भेंट किया।



हांसी-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में योगाचार्य ब्र.कु. गुरमेश, ब्र.कु. सोनिया एवं ब्र.कु. किरण ने गीत व संगीत के माध्यम से मन को परमात्मा से जोड़कर योगा-प्राणायाम करना सिखाया। कार्यक्रम के दौरान सोनीपत ट्रिटीट सेंटर की प्रभारी ब्र.कु. लक्ष्मी बहन भी उपस्थित रहीं।



हसनपुर-हरियाणा। ईश्वरीय ज्ञानचर्चा के पश्चात् आंगनबाड़ी ऑफिसर्स को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. इंदिरा बहन।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहट्टी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क - M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्रॉप्ट (पेपल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NO:- 30826907041
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH:- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya
Vishwa Vidhyalya,Shantivan
Note:- After Transfer send detail on
E-Mail -omshantimedia.acct@bkivv.org OR
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087

ALL-IN-ONE QR

Paytm
Accepted Here

Wallet KYC NOT Required

Scan & Pay using Paytm App

Wallet or Bank A/c Any Debit or Credit Card Paytm Postpaid



BHIM UPI



दिल्ली-पांडव भवन(करोल बाग)। ब्रह्माकुमारीज के 'कल्प तरु' अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण करते हुए रवि जी,स्थानीय विधायक, ए.के. सिंह,प्रिंसिपल साइटीस्ट,आईसीएआर पूसा, ब्र.कु. पुष्पा दीदी, निदेशिका, स्थानीय सेवाकेन्द्र तथा अन्य।



बाढ़-पटना(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर अनुग्रह नारायण सिंह महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. अनुज, डॉ. अशोक कुमार सिंह, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन व राष्ट्रीय कैडेट कोर के सदस्यों सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



प्रयागराज-उ.प्र.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए मध्य में महापौर बहन अभिलाषा नंदी, ब्रह्माकुमारीज की प्रयागराज मंडल संचालिका ब्र.कु. मनोरमा दीदी, जिला उद्यान अधिकारी सुरेंद्र राम भास्कर, पूर्व जिला उद्यान सुपरिन्टेंडेंट अखंड प्रताप सिंह, एनसीसी प्रयागराज कैप्टन रेखा पटेल, महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज की पूर्व प्रिंसिपल शीला रानी यादव, प्राथमिक विद्यालय के डिप्टी डायरेक्टर श्रीलेखा जी, नैनी पार्षद नीलम यादव आदि।



झालावाड़-राज.। राष्ट्रीय डॉक्टर्स दिवस पर डॉक्टर्स के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए स्त्री रोग विशेषज्ञ मंजू अग्रवाल, मेडिकल कॉलेज के पूर्व अध्यक्ष दीपक गुप्ता, दंत रोग विशेषज्ञ डॉ. गोकुल नागर, चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ. अतुल विजय, समर्पण हॉस्पिटल के डॉ. अरुण समर, जनरल फिजिशियन डॉ. अशोक पाटीदार तथा ब्र.कु. मीना दीदी।



वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी
ब्र.कु. गीता दीदी, माउप्ट आबू

अध्यात्म आचरण का हिस्सा बने

अगर मन परमात्मा में एकाग्र नहीं होता है, विकारों में अटकता है तो उसे शुष्क पांडित्य कहेंगे और ऐसी विद्वता, ऐसा पांडित्य आत्मा का कल्याण नहीं कर सकता। इसलिए जब कई लोग कहते हैं कि इनको तो पूरी गीता ही कंठस्थ है, सारे श्लोक उनको याद हैं, और लोग इन बातों से प्रभावित हो जाते हैं, ये हुई उनकी याद शक्ति, ये स्मिचुअल पॉवर तो नहीं हुआ ना!

अलग-अलग चिंतकों ने संसार के सनातन सत्यों के बारे में खुद चिंतन करके जो बातें बताईं मूल सत्य कौन से हैं। आत्मा के बारे में, परमात्मा के बारे में, सृष्टि चक्र के बारे में, कर्म के बारे में, जन्म के बारे में, वर्ण के चक्र के बारे में। ये जो संसार के सनातन सत्य हैं उन सत्यों पर विविध चिंतकों ने अपनी बुद्धि अनुसार, अपनी साधना की स्थिति अनुसार चिंतन करके जो बातें बताईं, जो मान्यतायें बताईं उसे हम शास्त्रयुक्त ज्ञान कहते हैं।

आत्मा की गति होती है स्मिचुअल पॉवर के आधार पर। इसीलिए बाबा हम बच्चों को कहते हैं कि हमें गीता शास्त्र नहीं पढ़ना है लेकिन जीवन को गीता बनाना है। बाबा के ज्ञान के आधार पर, प्रैक्टिकल प्रमाण हमारा जीवन बने, ये हमारा लक्ष्य है। इसलिए मुरली में बाबा उदाहरण भी देते हैं कि एक पंडित ने

माताओं को सिखाया कि राम-राम बोलोगे तो गंगा पार जाओगे। माताओं ने बड़ी श्रद्धा और विश्वास के साथ उस बात को ग्रहण कर लिया। जब मातायें सत्संग करके लौट रहीं थी तो उनको वापिस जाना था, तब कोई नईया नहीं थी तो उन्होंने भगवान के नाम पर ही उसको पार कर लिया। उन्होंने उस पंडित को कहा कि स्वामी जी आप भी हमारे साथ गांव चलिए। जब नदी किनारे पहुंचे तो बोले नांव कहाँ है? बोला स्वामी जी आपने ही तो सिखाया था कि राम-राम कहो तो पार हो जाओगे तो नईया क्यों मांग रहे हो? क्योंकि उनके पास सिर्फ पांडित्य थी, मान्यतायें थी। लेकिन माताओं के पास प्रैक्टिकल में वो विश्वास, श्रद्धा और निश्चय था जिसके बल से वो पार हो गईं। तो इसी रीति हम सभी बाबा के बच्चों का लक्ष्य है कि बाबा जो हम बच्चों को कहते हैं उसे रोज ब रोज के व्यवहारिक जीवन में धारण करना है। हमें बाबा की ज्ञान की बातों से केवल बुद्धि की झोली नहीं भरनी है लेकिन बुद्धि को भरने के बाद उसे हमें कर्म में लाना है, अभ्यास में लाना है और अनुभव की स्थिति को प्राप्त करना है। जैसे हम भोजन करते हैं, पेट में भरते हैं लेकिन अगर हम उसको डायजेस्ट नहीं करते हैं तो वो भोजन ब्लड और एनर्जी में कन्वर्ट (परिवर्तन) नहीं होता। हमें उस भोजन से शक्ति तब मिलेगी, उससे ब्लड तब मिलेगा जब वो डायजेस्ट होगा। इस प्रकार बाबा हम बच्चों को जो सत्य ज्ञान देते हैं उस सत्य ज्ञान की शक्ति का अनुभव हमें तब हो सकता है जब हम उसे अभ्यास में लायें। इसलिए सबसे पहले बाबा के ज्ञान को प्राप्त करने के बाद हमें अन्तर्मुखी बनकर विवेक से उस ज्ञान को समझना है।

आध्यात्मिकता का बहुत सरल अर्थ बाबा ने हम बच्चों को बताया है। आत्मा के विकास, पोषण और रक्षण हेतु जो अधिक ज्ञान उसे आध्यात्मिकता कहते हैं। बाबा के शब्दों में बिल्कुल सरल रूप से कि बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। तो बाप जो समझाते हैं वही स्मिचुअल नॉलेज है, आध्यात्मिक ज्ञान है। भक्ति में जो हम ज्ञान प्राप्त करते हैं वो फिलॉसफी है। अलग-अलग चिंतकों ने संसार के सनातन सत्यों के बारे में खुद चिंतन करके जो बातें बताईं मूल सत्य कौन से हैं। आत्मा के बारे में, परमात्मा के बारे में, सृष्टि चक्र के बारे में, कर्म के बारे में, जन्म के बारे में, वर्ण के चक्र के बारे में। ये जो संसार के सनातन सत्य हैं उन सत्यों पर विविध चिंतकों ने अपनी बुद्धि अनुसार, अपनी साधना की स्थिति अनुसार चिंतन करके जो बातें बताईं, जो मान्यतायें बताईं उसे हम शास्त्रयुक्त ज्ञान कहते हैं। मनुष्यात्माओं का ज्ञान कहते हैं। और वो फिलॉसफी है। केवल फिलॉसफी आत्मा का कल्याण नहीं कर सकती, जब तक फिलॉसफी प्रैक्टिकल जीवन में न आये। जिसके लिए हम लोगों को भी समझाते हैं कि आज हमारी बुद्धि में मान लो हमने हजारों शास्त्र पढ़े हैं और वो ज्ञान हमारी बुद्धि में भरा हुआ है तो बेशक वो विद्वता है, पांडित्य है। लेकिन हजारों शास्त्रों का ज्ञान होते हुए भी



सिरसागंज-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित 'डॉक्टर्स स्नेह मिलन' कार्यक्रम में स्थानीय सांसद डॉ. चंद्र सेन जादौन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीताजलि बहन, ब्र.कु. शशि बहन, जैनुलाब्दीन जी तथा शहर के अनेक चिकित्सक उपस्थित रहे।



आगरा-शाहीपुरम(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर 'कल्प तरु' परियोजना के तहत आयोजित कार्यक्रम में वृक्षारोपण करते हुए ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. अशोक गाबा, डॉ. सुमन गुप्ता, ब्र.कु. दीपक भाई, सुशील भाई, शैलेन्द्र भाई, अविनाश चंद तथा अन्य भाई-बहनें।



बहल-हरियाणा। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के 57वें पावन स्मृति दिवस पर ग्रामीण महिलाओं की नृत्य प्रतियोगिता रखी गई जिसमें सैकड़ों महिलाओं ने बहुत उमंग-उत्साह से भाग लिया तथा विजेता महिलाओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शकुंतला बहन, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय झुप्पा की प्रिंसिपल बिमला मैडम, विवेकानंद स्कूल बहल की प्रिंसिपल पृथा जायसवाल तथा ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



जयपुर-राजापार्क(राज.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'योगयुक्त बनो रोगमुक्त बनो' विषय पर सूरज मैदान में आयोजित कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन राजस्थान युवा संगठन महामंत्री केदार गुप्ता, डगायच ग्रुप एवं मेरिट होटल के चेयरमैन हरिमोहन डगायच, ब्रह्माकुमारीज की सबजोन इंचार्ज ब्र.कु. पुनम दीदी, योगा मेटिक पीस ऑफ माईड थैरेपी एंड वेलनेस सेंटर के डायरेक्टर योगाचार्य अजय नामा आदि उपस्थित रहे।



बालीचौकी मंडी-हि.प्र.। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी समझने के पश्चात् तहसीलदार रमेश ठाकुर को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. दक्षा बहन।



सादाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में समाजसेवी सोम वाष्ण्य, योगा शिक्षक दाऊजी, ब्र.कु. बबिता बहन, ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. कमलेश बहन, रमा बहन आदि अनेक भाई-बहनें उपस्थित रहे।



सोनीपत-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज के सोनीपत रिट्रीट सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में शारीरिक व्यायाम के साथ-साथ मन का व्यायाम किस तरह किया जाता है इसका बहुत सुंदर अनुभव कराया गया। कार्यक्रम में ब्र.कु. अनीता दीदी, ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी, ब्र.कु. विजय दीदी तथा ब्र.कु. बिन्दु दीदी सहित 300 से अधिक भाई-बहनें शामिल रहे।



भुरकुंडा-रामगढ़ कैंट(झारखण्ड)। बेंचमार्क पब्लिक स्कूल में ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'होलिस्टिक हेल्थ एंड पॉजिटिव थिंकिंग' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. श्वेता बहन, स्कूल के प्रिंसिपल आशुतोष कुमार चौबे तथा विद्यार्थीगण।



कादमा-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जिला प्रशासन एवं आयुष विभाग की ओर से खंड झोजकलां के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में आमंत्रित किये जाने पर ब्र.कु. वसुधा बहन ने सभी को राजयोग मेंडिटेशन का अभ्यास कराते हुए इसके बारे में विस्तार से बताया। इस मौके पर खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी सुभाष शर्मा तथा आयुष विभाग के अधिकारीगणों सहित हिंदुस्तान स्काउट्स एंड गाइड्स के जिला सचिव अमित जाखड़, योगाचार्य चांद सिंह आर्य व विद्यालय के स्टाफ भी मौजूद रहे।



मीरगंज-गोपालगंज(बिहार)। मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के 57वें पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता बहन, मालती बहन, बबिता बहन, गीता बहन तथा अन्य।



मालपुरा-राज.। 'राजयोग द्वारा एक कदम पिता से परम पिता की ओर' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. जीत बहन। मंचासीन हैं एडवोकेट राकेश कुमार वर्मा, रिटा. प्रिंसिपल साईटिस्ट जय सिंह मान तथा वरिष्ठ अध्यापक महावीर जी।

स्वास्थ्य

मूंग-चना खाएं, तन-मन को सफूर्त बनाएं

दालों में सबसे अच्छी दाल है मूंग दाल। मूंग दाल खाने के फायदे बहुत हैं। इसमें विटामिन ए, बी, सी, डी और ई प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसके अलावा मूंग दाल में आयरन, कैल्शियम, पोटैशियम आदि जैसे मिनरल्स भी अच्छी मात्रा में होते हैं। और इसके साथ-साथ काला चना भी कोई कम नहीं। आप सभी को मालूम होगा कि घोड़े को काला चना ही खिलाया जाता है। घोड़े को बहुत फूर्तिला पशु कहा जाता है। काला चना बाँड़ी में ऊर्जा पैदा करता है। इसमें आयरन, फोलेट, कॉपर, मैंगनीज, थियामिन, मैग्नीशियम व फॉस्फोरस पोषक तत्व पाए जाते हैं। अगर इनको अंकुरित किया जाये तो इनकी गुणवत्ता और भी बढ़ जाती है। तो इसीलिए हमें इन्हें अपनी डाइट में शामिल जरूर करना चाहिए। तो अब जानते हैं इनसे होने वाले फायदों के बारे में...

रक्त परिसंचरण को बढ़ाता

अंकुरित मूंग में लोहे और तांबे की महत्वपूर्ण मात्रा होती है जो लाल रक्त कोशिका की गिनती को बनाए रखकर आपके रक्त परिसंचरण को बढ़ाने में मदद करते हैं। यह आगे उनके प्रदर्शन को अनुकूलित करने के लिए विभिन्न अंगों और कोशिकाओं को ऑक्सीजन की आपूर्ति करने में मदद करता है। एक स्वस्थ रक्त की आपूर्ति बाल विकास के लिए एक अच्छा उत्तेजक है। यह नई रक्त वाहिकाओं को उत्पन्न करने में मदद करता है और खोपड़ी और रोम का परिसंचरण बढ़ाता है।

पाचन में मदद

स्पाउट्स में जीवित एंजाइमों की असामान्य रूप से उच्च मात्रा में होती है। ये एंजाइम आगे आपकी चयापचय प्रक्रियाओं को बढ़ाने और शरीर के भीतर रासायनिक प्रतिक्रियाओं को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। स्पाउट्स में बहुत अधिक आहार फाइबर होता है। जो पाचन को नियंत्रित करता है। मूल रूप से, फाइबर मल को ऊपर उठाता है, जिससे पाचन तंत्र से गुजरना आसान हो जाता है।

इन्फेक्शन से बचाता

मूंग की दाल में ऐसे गुण पाए जाते हैं जो बाँड़ी की इम्यूनिटी को मजबूत बनाकर कई सारी बिमारियों से लड़ने में मददगार हैं। इसमें एंटी-इन्फ्लेमेट्री प्रॉपर्टीज पाई जाती है, जो बाँड़ी की एंटी माइक्रोबियल और इम्यूनिटी को बूस्ट करता है।

कब्ज से दिलाये छुटकारा

मूंग की दाल के अंकुरित में फाइबर ज़्यादा मात्रा में होता है। जिससे पाचन तंत्र दुरुस्त रहता है और कब्ज जैसी समस्याओं से छुटकारा मिलता है।

बैलेंस डाइट

अगर आप वेजिटेरियन हैं तो आपको अंकुरित मूंग की दाल का सेवन जरूर करना चाहिए। इससे शरीर में जरूरी न्यूट्रीएंट्स की सप्लाई होती है और शरीर मजबूत बनता है। शाकाहारी लोगों के लिए अंकुरित मूंग दाल से बढ़िया और कोई आहार नहीं है। यह आसानी से पच भी



जाता है।

बाँड़ी को करता डिटॉक्स

अंकुरित मूंग दाल को खाने से शरीर की अंदरूनी सफाई हो जाती है और बाँड़ी से जहरीले पदार्थ बाहर निकल जाते हैं। जिससे स्किन चमकदार बनने लगती है और पूरा शरीर स्वस्थ बना रहता है।

अंकुरित चने के फायदे

1 बलवर्धक : अंकुरित चना बलवर्धक होता है। नित्य इसका सेवन करने से शरीर पुष्ट और बलवान होता है।

2 खून की कमी : शरीर में खून की कमी होने पर अंकुरित चने खाएं। इसमें शरीर को काफी मात्रा में आयरन मिलता है जो खून की कमी को पूरा करता है और एनीमिया जैसी समस्या को भी दूर करता है।

3 बार-बार पेशाब आना : जिन लोगों को बार-बार पेशाब आने की समस्या होती है उन्हें अंकुरित चने के साथ गुड़ का सेवन करना चाहिए।

4 घबराहट या बेचैनी : लगभग 50 ग्राम चना और 25 दाने किशमिश को रोजाना रात में पानी में भिगोकर रख दें।

सुबह खाली पेट चने और किशमिश खाने से घबराहट दूर हो जाती है।

5 तमन(उल्टी) : चनों को रात को पानी में भिगोकर रख दें। सुबह इसका पानी पी लें। अगर किसी गर्भवती औरत को उल्टी हो रही हो तो भूने हुए चने का सत्तु बनाकर पिलायें।

6 भूख अधिक लगना : चने को पानी में भिगोकर रातभर रख दें। सुबह इसका पानी पीने से बार-बार भूख लगना बंद हो जायेगा।

7 चेहरे की झाँई के लिए : 2 बड़े चम्मच चने की दाल को आधा कप दूध में रात को भिगोकर रख दें। सुबह दाल को पीसकर उसी दूध में मिला लें। फिर इसमें एक चुटकी हल्दी और 6 बूंद नींबू की मिलाकर चेहरे पर लगाकर रखें। सूखने पर चेहरे को गुनगुने पानी से धो लें। इस पैक को सप्ताह में तीन बार लगाने से चेहरे की झाँईयाँ दूर हो जाती हैं।

अंकुरित मूंग दाल व चना खाने के नुकसान

अंकुरित मूंग दाल व चना को कच्चा खाने से किसी-किसी को गैस बन जाती है। तो जिनको ये प्रॉब्लम होती है तो वो इसे कच्चा न खाकर थोड़ा-सा पका कर खायें। जिससे इसके पोषक तत्व भी खत्म न हों और प्रॉब्लम भी न हो। इसे दो दिन से ज़्यादा न रखें। नहीं तो ये नुकसान पहुंचा सकता है।



जयपुर-राजापार्क(राज.) ब्रह्माकुमारीज एवं पिक सिटी म्यूजिक एकेडमी के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 'संगीत संग परमात्म मिलन' विषयक संगीत संस्था कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज की सब जॉन इंचार्ज ब्र.कु. पूनम दीदी, मुम्बई एवं राजस्थान के कलाकार सुखीराम मंडा एवं चुन्नी जयपुरी, मुहम्मद बेगम, बीजेपी अध्यक्ष राजस्थान भंवर लाल भाटी, ऑल इंडिया जर्नलिस्ट महामंत्री दीपक जी, पार्षद स्वाति परनामी, ब्रांच हेड आदित्य बिरला सन लाइफ इश्योरस मुकेश बागड़ी, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं एनएसएस प्रोग्राम ऑफिसर सुधीर वर्मा तथा शहर के अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



जमशेदपुर-झारखण्ड ब्रह्माकुमारीज के युनिवर्सल पीस पैलेस, सोनारी सेवाकेन्द्र में 'कल्प तरु' प्रोजेक्ट के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में सरिता दास, उप सचिव, गृह जेल और आपदा प्रबंधन विभाग, झारखण्ड सरकार, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजू दीदी, तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



शामली-पानीपत(हरियाणा) अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में शारीरिक योग एवं राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करने के पश्चात् शामली के सी.डी.ओ. शम्भूनाथ तिवारी तथा भारतीय योग संस्थान के संस्थापक अनुज जैन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सपना।



होशियारपुर-पंजाब मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में गुरुद्वारे के महंत रंजीत सिंह, मौनी जी, हरमेल सिंह जी, ब्र.कु. ऊषा दीदी तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



कोहिमा-नागालैंड अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस के अवसर पर कोहिमा पुलिस हेडक्वार्टर में ब्रह्माकुमारीज के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. विकास अग्रवाल, नारकोटिक्स स्पेशलिस्ट, दिल्ली तथा रिटा. कर्नल विकास चौहान, जबलपुर ऑनलाइन शामिल हुए। इस मौके पर ब्र.कु. रूपा बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका, कोहिमा तथा नागालैंड के अन्य क्षेत्रों की संचालिका, पी.बेदंगचुबा जमीर, एनपीएस, एसपी कोहिमा तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



भट्टू मंडी-हरियाणा अंतर्राष्ट्रीय नशा मुक्ति दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा महारेली का आयोजन किया गया। इस मौके पर पुलिस उपाधीक्षक चंद्रपाल सिंह, पूर्व पंचायत सदस्य डॉ. दर्शनानंद शर्मा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता बहन, ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग के सदस्य डॉ. एन.डी. शर्मा, समाजसेवी नरेंद्र लूना देशराज तथा अन्य समाजसेवियों सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

ज्ञान की पॉवर ऐसी है...



कहाँ पहुंचती हैं? कहाँ पहुंचती हैं? उस सॉल को पहुंचती हैं जो आगे किसी माँ के गर्भ में एंटर(प्रवेश) हो चुकी है। और ये सारी थॉट्स, ये सारी सोच जब उस बच्चे को पहुंचती है तो गर्भ के अन्दर वो बच्चा क्या होता है, बहुत दुःखी होता है, बहुत परेशान होता है। उस माँ को बड़ी तकलीफ होती है। अन्दर माँ के गर्भ में उस आत्मा का शरीर बन रहा है। और हम उसे इतनी दर्द की,

बहन ने क्या किया सेंटर पर कॉन्टेक्ट किया। सेंटर से बहनों को घर पर बुलाया और कहा कि 7 दिन आप हमारे घर पर इतना मेडिटेशन करो, ऐसा वातावरण क्रियेट करो कि हमारे घर पर जो भी आए, वो शांत हो जाये, एकाग्र हो जाये रोना नहीं चाहिए कोई, और उन्होंने किया। एक माँ को बेटा याद नहीं आयेगा, ये हो नहीं सकता। मिस नहीं करेगी ये हो नहीं सकता लेकिन एक है याद दर्द में, और दूसरी याद शांति, शक्ति और प्यार में। दो बातों में फर्क है।

इतनी पॉवर है हमारे अन्दर कि हम जीवन की सबसे बड़ी बात जिसके लिए दुनिया कहे कि नैचुरल है कि अगर ऐसा कुछ पता चलेगा तो क्या होगा? नैचुरल की परिभाषा हमारी बहुत अलग है लेकिन अगर ज्ञान समझ में आ जाये कि हमारे रोने से और हमारे अन्दर उस तरह से सोचने से उस आत्मा को दर्द मिलता है, उस आत्मा को दुःख मिलता है तो वो आत्मा पीछे की तरफ खींचती है। वो आत्मा अपनी आगे की जर्नी पर सेट नहीं हो पाती है। जब इतना सब समझ में आ जाता है तो सही सोचना बहुत इजी होता है... बहुत इजी होता है। और तब हमें ये पता चलता है कि हमारे अन्दर इतनी शक्ति है कि हमारे जीवन में कोई भी बात आ जाये एंड कोई भी मतलब कोई भी। तब हम उसका आसानी से सामना कर सकते हैं।

जब उसको वो बात पता चली फिर उस

दुःख की, निगेटिव एनर्जी दे रहे हैं।

उस बहन ने फर्स्ट एपिसोड देखा। कहती मुझे अच्छा लगा और मैंने रोज़ देखना शुरू किया। चार ही दिन देखा था, सिर्फ चार दिन और सिर्फ बीस मिनट। पाँचवें दिन उसके 21 साल के बेटे की एक्सीडेंट में मौत हो गई, और उस दिन उसने क्या कहा कि जैसे ही मुझे फोन आया और मुझे ये बात पता चली तो मेरी जो फर्स्ट थॉट थी वो ये थी कि मैं खुद या अपने परिवार को मेरे बेटे को दर्द देने नहीं दूंगी। न मैं खुद रोऊंगी और न मैं अपने घर में किसी को रोने दूंगी। जो उसको याद करेगा, प्यार से याद करेगा। परमात्मा को कनेक्ट करके शांति और शक्ति भेजेगा। रोके कोई याद नहीं करेगा ये उसकी फर्स्ट थॉट थी।

जब उसको वो बात पता चली फिर उस

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

एक बहन माउण्ट आबू आई। वो विदेश में रहती है। दो मिनट के लिए वो मिली और जब उसने अपना अनुभव सुनाया तो मुझे लगा कि देखो ज्ञान में कितनी पॉवर है। उसने कहा मैंने एक दिन ऐसे ही टीवी देखा, प्रोग्राम देखा तो अच्छा लगा। पहले दिन उसने जो एपिसोड देखा फर्स्ट टाइम, फर्स्ट डे। एपिसोड ये था कि अगर आपकी फैमिली में किसी की डैथ(मृत्यु) होती है और वो आत्मा अपनी जर्नी पर आगे जाती है तो आपको उसको कैसे याद करना है। क्योंकि याद तो आयेगी, हमेशा आयेगी। लेकिन अगर आप रोके याद करेंगे, दुःखी होकर याद करेंगे, ये सोचकर याद करेंगे कि आप चले गए, आपके बिना मेरा कैसा होगा, वापिस आ जाओ, मुझे कैसे छोड़कर चले गए तो ये सारे थॉट्स, ये सारे वायब्रेशन्स



रामपुर-उ.प्र. नवनिर्वाचित सांसद घनश्याम सिंह लोढ़ी को बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. संगीता बहन तथा ब्र.कु. प्रभा बहन।



दिल्ली-लोधी रोड। ब्रह्माकुमारीज द्वारा एनएचआईडीसीएल, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार के अधिकारियों के लिए आयोजित 'योग एक लाभ अनेक' विषयक कार्यशाला में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पीयूष भाई।



समस्तीपुर-बिहार। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए अपर मंडल रेल प्रबंधक जे.के. सिंह। मंचासीन हैं ब्र.कु. सविता बहन, रोटरी क्लब के सिटी प्रिजिडेंट केशव किशोर प्रसाद तथा ब्र.कु. कृष्ण भाई।



फरीदाबाद-एनआईटी(हरियाणा)। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन हरियाणा, फाउंडेशन अगेस्ट थैलासीमिया, उजाला मित्रा ग्रुप तथा ब्रह्माकुमारीज के संयुक्त तत्वाधान में रक्तदान शिविर एवं स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन ब्रह्माकुमारीज के नीलम बाटा रोड स्थित सेवाकेन्द्र पर किया गया। कार्यक्रम में डॉ. विनय गुप्ता, चीफ मेडिकल ऑफिसर, बीके हॉस्पिटल फरीदाबाद, डॉ. पुनिजा हसीजा, प्रिजिडेंट, आईएमए हरियाणा, डॉ. भारती शर्मा, ट्रेज़रर, आईएमए हरियाणा, पैट्रन डॉ. सुरेश अरोड़ा, आईएमए हरियाणा, समाज सेवी अजय नाथ, सुशील भाटिया, ब्यूरो चीफ, दैनिक जागरण, गुलशन भाटिया, चैयरमैन, होटल राजमंदिर, पूर्व मेयर सुमन बाला, रोटेरियन मनुज मदान सहित शहर के अन्य प्रतिष्ठित लोग उपस्थित रहे। इस मौके पर ब्र.कु. पूनम दीदी ने सभी मेहमानों को ईश्वरीय सौगात भेंट की।



अयोध्या-उ.प्र. ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के पश्चात् रेलवे सुपरिटेण्डेंट विनोद कुमार को ओम शान्ति मीडिया, ईश्वरीय साहित्य व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रियंका बहन। साथ हैं ब्र.कु. अखिलेश भाई।



उधमसिंह नगर-जम्मू एंड कश्मीर। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर मिलिट्री कैम्प में राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराते हुए ब्र.कु. ममता बहन।



नैनीताल-उत्तराखण्ड। ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर नेशनल प्रेस क्लब ऑफ इंडिया द्वारा ब्र.कु. नीलम बहन को सम्मानित करते हुए बायें से नेशनल प्रेस क्लब ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय प्रवक्ता आर्य रत्न डॉ. सौरभ आर्य, कर्मवीर सिंह नागर, प्रिंसिपल स्टाफ ऑफिसर, रेल मंत्रालय, भारत सरकार दिल्ली, ब्र.कु. वीना बहन, हरि अंगिरा जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, चैयरमैन, नेशनल प्रेस क्लब ऑफ इंडिया, उ.प्र., स्वामी सच्चिदानंद सरस्वती, तपोनिष्ठ सन्यासी, वैदिक ज्ञान आश्रम, यमुनानगर हरियाणा तथा नंद गोपाल वर्मा, नेशनल चीफ सेक्रेटरी, कार्यालय ग्रेटर नोएडा, नेशनल प्रेस क्लब ऑफ इंडिया उ.प्र.।



बेतिया-संतघाट(बिहार)। 'कल्प तरु' परियोजना के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज के प्रभु उपवन सेवाकेन्द्र में आयोजित पौधा रोपण कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अंजना बहन, बेतिया हॉस्पिटल गायनिक डिपार्टमेंट से डॉ. सुधा भारती, विनोद जायसवाल, अनीता जायसवाल, धर्मेंद्र जायसवाल तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



मोकामा-बिहार। विश्व योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में योग करवाते हुए योगा टीचर धर्मराज भाई। कार्यक्रम में चोसवरी के प्रखंड प्रमुख आकाश जी, मोकामा वाड 5 के मुखिया संजय गुप्ता, सामाजिक कार्यकर्ता निलेश कुमार माधव, ब्र.कु. निशा बहन तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



लुधियाना-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस के अवसर पर डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन एवं लुधियाना पुलिस के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित मैराथन में आमंत्रित किये जाने पर ब्रह्माकुमारीज के 50 भाई-बहनों ने मैराथन में भाग लिया। इस मौके पर डिप्टी कमिश्नर सुरभि मलिक, पुलिस कमिश्नर डॉ. कौस्तुभ शर्मा तथा एडिशनल डिप्टी कमिश्नर अमरजीत बैस सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।



कानपुर-शिवली(उ.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योगाभ्यास कराते हुए योगाचार्य शिव किशोर मिश्रा। साथ हैं ब्र.कु. बिमलेश, ब्र.कु. नीरज, ब्र.कु. रूपा, ब्र.कु. रामबाबू, ब्र.कु. विष्णु भाई एवं गौरी बहन तथा अन्य।



रुदावल-राज। ब्रह्माकुमारीज की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में अपनी शुभ कामनायें देते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन। साथ हैं पूर्व तहसीलदार मेवाराम बंसल तथा अन्य।

परमात्म ऊर्जा



तुम हरेक बच्चे को पुरुषार्थ करना है तख्तनशीन बनने का न कि तख्तनशीन के आगे रहने का। तख्तनशीन तब बनेंगे जब अब समीप बनेंगे। जितना जो समीप होगा उतना समानता में रहेगा। तुम बच्चों के नैनों को कोई देखे तो उनको मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता दिखाई दे। ऐसा नयनों में जादू हो। तो आपके नैन कितनी सेवा करेंगे! नैन भी सर्विस करेंगे तो मस्तिष्क भी सर्विस करेगा। मस्तिष्क क्या दिखाता है, आत्माओं को? बाप। आपके मस्तिष्क से बाप का परिचय हो ऐसी सर्विस करनी है। तब समीप सितारे बनेंगे। जैसे साकार में बाप को देखा मस्तक और नैन सर्विस करते थे। मस्तिष्क में ज्योति बिंदु रहता था, नैनों में तेज त्रिमूर्ति के याद का। ऐसे समान बनना है। समान बनने से ही समीप बनेंगे। जब आप स्वयं ऐसी स्थिति में रहेंगे तो माया क्या करेगी, माया स्वयं खत्म हो जायेगी। तुम बच्चों को रेग्यूलर बनना है। बापदादा रेग्यूलर किसको कहते हैं?

रेग्यूलर उनको कहा जाता है जो सुबह से लेकर रात तक जो कर्तव्य करता है वह श्रीमत के प्रमाण करता है। सब में रेग्यूलर। संकल्प में, वाणी में, कर्म में, चलने में, सोने में, सबमें रेग्यूलर। रेग्यूलर चीज अच्छी होती है। जितना जो रेग्यूलर होता है उतना दूसरों की सर्विस कर सकता है। सर्विसएबुल अर्थात् एक संकल्प भी सर्विस के सिवाए न जाए। ऐसे सर्विसएबुल और कोई सबूत बना सकते हैं। सर्विस केवल मुख की ही नहीं लेकिन सर्व कर्मेंद्रियां सर्विस करने में तत्पर हों। जैसे मुख बिज्जी होता है वैसे मस्तिष्क, नैन सर्विस में बिज्जी हो। सर्व प्रकार की सर्विस कर सर्विस का सबूत निकालना है। एक प्रकार की सर्विस से सबूत नहीं निकलता सिर्फ सराहना करते हैं। चाहिए सबूत, तो सबूत देने के लिए सर्व प्रकार की सर्विस में सदा तत्पर रहना है। सर्विसएबुल जितना होगा वैसा आप समान बनाएगा। फिर बाप समान बनाएगा।



पोंटा साहिब-हि.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री एसोसिएशन में आयोजित 'पॉजिटिव थिंकिंग से समस्याओं का समाधान' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. ई.वी. गिरीश भाई।



हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस पर चिकित्सकों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. अशोक कुमार चौहान तथा डॉ. कुणाल वाण्येय को कोविड-19 के दौरान उनके साहसिक सेवाओं के लिए सम्मानित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शान्ता बहन। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक, जिला स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी, पुलिस फैमिली वेलफेयर सोसायटी की अध्यक्ष सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

कथा सरिता



से पूछा यह सोने की चैन तुम्हें किसने दी।

रवि ने उसको बता

दिया यह चैन उसको उसकी मम्मी ने दी है। चुनीलाल रवि की सोने की चैन देख कर लालच में आ गया। उसने उस दिन उसको बहुत सारे गोलगप्पे खिलाए। जब रवि उसको गोलगप्पे के 20 रूप देने लगा तो चुनीलाल बोला तुमने 100 रूपए के गोलगप्पे खाये हैं। रवि बोला मेरे पास तो इतने ही रूपए हैं। यह सुनकर चुनीलाल बोला कोई नहीं तुम यह अपनी सोने की चैन मुझे दे दो।

रवि को सोने की चैन की कीमत का

एक बार की बात है, चुनीलाल नाम का एक व्यक्ति था। उसने पैसे कमाने के लिए बहुत से प्रयास किये जैसे कभी चूड़ियां बेचीं, कभी खिलौने बेचे और कभी सब्जियां बेची लेकिन उसका कोई भी काम नहीं चला। फिर उसने गोलगप्पे बेचने का सोचा और स्कूल के सामने जाकर गोलगप्पे बेचने लगा। जैसे ही स्कूल की छुट्टी होती थी तो बहुत से छोटे बच्चे उसके ठेले पर आते और गोलगप्पे खाते थे।

वह गोलगप्पे बेचते हुए बच्चों से बात

बोला कि अगर तुम्हारी मम्मी तुमको पैसे नहीं देती तो तुम अपने घर से पैसे चुरा सकते हो जिससे तुम जितने चाहो उतने गोलगप्पे खा सकते हो।

रवि के कोमल मन में यह बात बैठ गयी और उसने अपने घर में चोरी करने की सोची। रवि अगले दिन घर की अलमारी में रखे हुए पैसे चुराने लगा तभी उसकी मम्मी आ गयी और उसने रवि को पैसे चुराते हुए देख लिया। रवि की मम्मी ने उसको डाँटा तो उसने बताया चुनीलाल गोलगप्पे वाले ने उसको चोरी करने को बोला था। सोने की चैन के बारे में भी उसने अपनी मम्मी को बताया जिसे चुनीलाल ने ले लिया था।

यह सुनकर रवि की मम्मी हैरान हो गयी और उसने चुनीलाल को रंगे हाथों पकड़ने की सोचा। अगले दिन रवि स्कूल की छुट्टी होने पर चुनीलाल के पास पहुंचा तब चुनीलाल ने उससे पूछा कि क्या उसने घर में चोरी की तब रवि ने उसको बोला कि उसने चोरी की और उसको 2000 का नोट दिखाया जो चुनीलाल ने ले लिया और उसको गोलगप्पे देने लगा तभी रवि की मम्मी वहाँ आ गयी और उसने चुनीलाल को रंगे हाथों पकड़ लिया।

चुनीलाल बहुत डर गया उसने रवि की मम्मी को बोला कि वह पैसे और सोने की चैन लौटा देगा लेकिन रवि की मम्मी ने उसको पुलिस के पास दे दिया जिससे वह और किसी बच्चे के साथ ऐसा न कर सके।

शिक्षा : इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें लालच नहीं करना चाहिए और बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है।



करता और उनके बारे में जान लेता था। रवि नाम का एक स्कूल का बच्चा जिसको गोलगप्पे खाने का बहुत शौक था। वह स्कूल की छुट्टी होने पर रोज उसके पास आकर गोलगप्पे खाता था। वह रवि से बात करता और उसके घर के बारे में पूछता था। एक दिन उसने रवि के गले में सोने की चैन देखी तो चुनीलाल ने रवि

पता नहीं था। उसने वह चैन उतार कर चुनीलाल को दे दी। अगले दिन जब रवि की स्कूल की छुट्टी हुई तो रवि घर जाने लगा यह देखकर चुनीलाल ने उसको गोलगप्पे खाने को बोला। रवि ने बताया कि उसके पास पैसे नहीं हैं, उसको उसकी मम्मी ने पैसे नहीं दिए। यह सुनकर चुनीलाल रवि को भड़काने लगा और

एक समय की बात है। एक गाँव में एक मूर्तिकार रहता था। मूर्तिकला के प्रति अत्यधिक प्रेम के कारण उसने अपना सम्पूर्ण जीवन मूर्तिकला को समर्पित कर दिया। फलतः वह इतना पारंगत हो गया कि उसकी बनाई हर मूर्ति जीवंत प्रतीत होती थी।

उसकी मूर्तियों को देखने वाला उसकी कला की भूरी-भूरी प्रशंसा करता था। उसके गाँव में ही नहीं, बल्कि उसकी कला के चर्चे दूर-दूर के नगर और गाँव में होने लगे थे। ऐसी स्थिति में जैसा सामान्यतः होता है, वैसे ही मूर्तिकार के साथ भी हुआ। उसके भीतर अहंकार की भावना जागृत हो गई। वह स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मूर्तिकार मानने लगा।

उम्र बढ़ने के साथ जब उसका अंत समय निकट आने लगा, तो वह मृत्यु से बचने की युक्ति सोचने लगा। वह किसी भी तरह स्वयं को यमदूत की दृष्टि से बचाना चाहता था ताकि वह उसके प्राण न हर सके। अंततः उसे एक युक्ति सूझ ही गई। उसने अपनी बेमिसाल मूर्तिकला का प्रदर्शन करते हुए 10

मूर्तियों का निर्माण किया। वे सभी मूर्तियां दिखने में हूबहू उसके समान थीं। निर्मित होने के पश्चात् सभी मूर्तियां इतनी जीवंत प्रतीत होने लगी कि मूर्तियों और मूर्तिकार में कोई अंतर ही ना रहा।

मूर्तिकार उन मूर्तियों के मध्य जाकर बैठ गया। युक्तिनुसार यमदूत का उसे इन मूर्तियों के मध्य पहचान पाना असंभव था। उसकी युक्ति कारगर भी सिद्ध हुई। जब यमदूत उसके प्राण हरने आया तो ग्यारह एक जैसी मूर्तियों को देख चकित

विरुद्ध जाना। प्रकृति के नियम के अनुसार मूर्तिकार का अंत समय आ चुका था। मूर्तिकार की पहचान करने के लिए यमदूत हर मूर्ति को तोड़ कर देख सकता था। किंतु वह कला का अपमान नहीं करना चाहता था। इसलिए इस समस्या का उसने एक अलग ही तोड़ निकाला।

उसे मूर्तिकार के अहंकार का बोध था। अतः उसके अहंकार पर चोट करते हुए वह बोला, "वास्तव में सब मूर्तियां कलात्मकता और सौंदर्य का अद्भुत संगम है किंतु मूर्तिकार एक त्रुटि कर बैठा। यदि वो मेरे सम्मुख होता, तो मैं उसे उस त्रुटि से अवगत करा पाता।"

अपनी मूर्ति में त्रुटि की बात सुन अहंकारी मूर्तिकार का अहंकार जाग गया। उससे रहा नहीं गया और झट से अपने स्थान से उठ बैठा और यमदूत से बोला, "त्रुटि? असंभव! मेरी बनाई मूर्तियां सर्वदा त्रुटिहीन होती हैं।" यमदूत की युक्ति काम कर चुकी थी। उसने मूर्तिकार को पकड़ लिया और बोला, "बेजान मूर्तियां

बोला नहीं करती और तुम बोल पड़े। यही तुम्हारी त्रुटि है कि अपने अहंकार पर तुम्हारा कोई बस नहीं।" यमदूत मूर्तिकार के प्राण हर यमलोक वापस चला गया।

सीख : अहंकार विनाश का कारण है इसलिए अहंकार को कभी भी खुद पर हावी नहीं होने देना चाहिए।

अहंकार को खुद पर हावी न होने दें...



रह गया। वह उन मूर्तियों में अंतर कर पाने में असमर्थ था। किंतु उसे ज्ञात था कि इन्हीं मूर्तियों के मध्य मूर्तिकार छुपा बैठा है।

मूर्तिकार के प्राण हरने के लिए उसकी पहचान आवश्यक थी। उसके प्राण न हर पाने का अर्थ था- प्रकृति के नियम के

ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय शांतिवन ➔ 'परमात्मा के सत्य स्वरूप' विषय पर त्रिदिवसीय संत सम्मेलन में सम्मिलित होकर अद्भुत अनुभव पाया...

यहाँ परमात्म कार्य होते देखा...

आदरणीय श्री सिद्धपीठ पीठाधीश्वर डॉ. स्वामी कौशल किशोर दास जी, सिद्धपीठ श्री लालजी महाराज मंदिर खोरी, भरतपुर, आपने सम्पूर्णानंद विश्वविद्यालय से वेदान्ताचार्य, राष्ट्रीय भवन में मुंबई से न्यायचार्य, काशी विद्यापीठ से एम ए, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। आप कर्मकाण्ड और भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता और विज्ञान की दृष्टि से विश्लेषण करते हैं, आपका गहन चिंतन है। आपने विशेष पर्यावरण, गौ शाला और समाज सुधार के अनेक कार्यक्रम किये हैं। आपको, आपके गुरुजी को भरतपुर महाराजा से पाँच सौ बीघा जमीन सिद्धपीठ को सम्भालने के लिए प्राप्त है और आप बहुत ही विनम्र और बहुत ही संस्कारवान बाबा के बच्चे हैं। आदरणीय दादियों से भी आपकी मुलाकात बड़ी अच्छी तरह से हो चुकी है। तीसरी बार आपका इस संत सम्मेलन में मधुवन में आगमन हुआ।

यहाँ आकर के जिस अलौकिक शांति का अनुभव कर रहा हूँ, जो-जो अनुभूतियाँ हो रही हैं, जो वायब्रेशन मिल रहे हैं उनका वर्णन कैसे करूँ? यदि गूंगे व्यक्ति को कोई गुड़ खिला दे और पूछे इसका स्वाद कैसा है, तब गूंगा व्यक्ति क्या बतायेगा? केवल सिर हिलायेगा, संकेत करेगा मगर जो स्वाद मिला है उसे शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। उसी तरह से हमें जो अनुभूति हो रही, जो आनंद आ रहा, जो अनुभव हो रहे हैं उन्हें शब्दों में बांधना तो मुश्किल है। उनकी ओर संकेत अवश्य करेंगे, पहले तो हमें देखने में लगा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान का इतना बड़ा शांतिवन परिसर है। मुझे लगता है यह संस्था नहीं एक शहर है, पूरा का पूरा शहर। और इतने बड़े शहर को मैनेज करने के लिए, व्यवस्थित करने के लिए पूरा का पूरा स्टाफ होता है और फिर भी शहर में कोई न कोई न्यूनता, हलचल बनी ही रहती है। मगर इस परिसर में आकर हमने किसी को मालिक देखा ही नहीं। मालिक कौन है यही पता नहीं लगा। इसका प्रबन्धक कौन है यह पता नहीं लगा अभी तक। उसके बावजूद भी अव्यवस्था नाम की कोई चीज नज़र नहीं आई। सारी की सारी व्यवस्थायें हैं। इतनी साफ-सफाई है कि हजार आदमी लगा दें तो भी इतनी साफ-सफाई न हो। इतनी शांति है, सारे के सारे साधक अपनी साधना में लगे हुए हैं और कहीं अव्यवस्था नहीं है। भोजन के समय पर भोजन हो रहा है। और निवास बहुत बढ़िया, साथ ही भोजन बहुत बढ़िया, चाय, दूध, दही जो चाहे वो समय से उपलब्ध हो रहा है और ऐसे हो रहा है जैसे कोई अदृश्य शक्ति कर रही हो। यहाँ हमने कई अलौकिक वस्तुओं का दर्शन

किया है। कहते हैं जिस हॉल में हम बैठे हैं वह पूरे एशिया का यह पहला ही ऐसा हॉल है, पिल्लरलेस, जिसमें कोई खंभा नहीं है। यह अलौकिक है। और उससे भी अलौकिकता एक और है। कहते हैं एक बार दिल्ली से मुम्बई एक ट्रेन जा रही थी। वहाँ दो माताएँ सफर कर रहीं थीं। एक प्रतियोगिता हो रही थी कि जो सबसे बड़ा झूठ बोलेंगे उसे सबसे बड़ा पुरस्कार दिया जायेगा। एक व्यक्ति कहता है सबसे बड़ा झूठ मैं बोल सकता हूँ। तो बोले, बोलो। दिल्ली से मुम्बई ट्रेन जा रही थी उसमें दो मातायें पास-पास बैठी थी और दिल्ली से मुम्बई तक उन्होंने आपस में कोई बात ही नहीं की। बोलो इससे बड़ा झूठ कोई हो ही नहीं सकता कि दो माता और बात न करे, असम्भव! यह सबसे बड़ा झूठ था। लेकिन हमने झूठ को भी यहाँ झूठ पाया कि इस हॉल में पच्चीस हजार की कैपेसिटी (क्षमता) वाला सत्संग हॉल है। जहाँ पच्चीस हजार लोग बैठे हुए हों और वहाँ मंच से एक बार भी अनाउन्स करना पड़ता है आपस में बात मत करो, शांति

कर रहे हैं, बहुत अच्छा सम्पादन कर रहे हैं

- श्री सिद्धपीठ पीठाधीश्वर डॉ. स्वामी कौशल किशोर दास जी, भरतपुर

तो उन्होंने भी कहा कि मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ, बाबा कर रहा है। अपने जो भोजनालय प्रमुख हैं उनसे मिला तो उनसे पूछा कि इतने बड़े लोगों की व्यवस्था आप कर

झुक जाता है। फलदार वृक्ष ही झुकता है और निष्फल वृक्ष जो है वो अकड़ के खड़ा हो जाता है। तो सारे के सारे झुके हुए हैं क्यों, क्योंकि इन्होंने कुछ पाया है, इनकी कुछ न कुछ अनुभूति है। ये इतना सम्भव नहीं है कि कहने से कोई व्यक्ति झुक जाये, कहने से चुप हो जाये, कहने से शांत हो जाये। इनकी जो साधना है, इनके अन्दर कुछ है। यहाँ देखने से लगता है कि यहाँ ईश्वरीय शक्ति, बाबा की शक्ति, ये सारे के सारे काम एक अदृश्य शक्ति कर रही है। वो अदृश्य शक्ति कौन, वो बाबा की शक्ति है। जो सारे के सारे काम कर रही है।

यज्ञ की वरिष्ठ दादियाँ भले ही साकार में न हों। किन्तु वे सूक्ष्म में हमारे साथ यहीं हैं। चाहे दादी प्रकाशमणि जी हों, चाहे दादी गुलज़ार जी हों, या फिर दादी जानकी जी। वरना तो चार बुद्धिमान इकट्ठे हो तो वहीं विघटन पैदा हो जाता है, वहीं खींचतानी पैदा हो जाती है। और यहाँ तो बुद्धिमानों का एक वर्ग है। ये दिव्य क्वालिटी वाला वर्ग यहाँ है। यहाँ अदृश्य शक्ति कार्य कर रही है, ये मैं यहाँ अनुभव कर रहा हूँ। क्योंकि यहाँ फाउण्डेशन ही पवित्रता के आधार पर है। मैं जिससे भी मिला उन सबका अनुभव ये है कि यहाँ सभी कहते हैं कि बाबा ने कहा ब्रह्मचर्य का पालन करो, पवित्र बनो। फिर मैंने आगे समझने की कोशिश की तो यहाँ पर घर-गृहस्थ में रहकर पवित्र जीवन की साधना करना ये कोई चमत्कार से कम नहीं है। ये महान कार्य है। राजमार्ग पर चलना तो आसान काम है, रोड के ऊपर तो कोई भी दौड़ सकता है लेकिन कांटों से भरे मार्ग पर चलना और दौड़ना जिसमें फिर कांटे भी न चुभें, ये एक विशेषता है। यह सारा कार्य ब्रह्माकुमारी संस्थान बाबा ने, दादियों ने, दीदीयों ने बखूबी निभाया और अब हमारी ये सब दीदीयाँ इस कार्य को बखूबी आगे बढ़ा रही हैं। यह सारे के सारे धन्यवाद के पात्र और आदर के पात्र हैं।

यहाँ मैंने शांति का साम्राज्य और प्रसन्नचित वातावरण तथा सबकुछ सुव्यवस्थित व आदर्श करने वाली बातें जानी और देखीं। मैं जिससे भी मिला उनके सबके अनुभव एक नम्रचित और सूक्ष्म दिव्यता सम्पन्न हैं। यहाँ परमात्मा की छत्रछाया में बाह्य वातावरण से सुरक्षित हैं। ऐसा वातावरण इस धरा पर कहीं और होना सम्भव नहीं। हम जानेंगे संस्थान के अनुभव उन्हीं के शब्दों में...

बनाये रखो, प्रेम से सुनो, यह कहते हमने सुना ही नहीं। इन लोगों को शांति किसने रखा है यह भी एक एशिया का क्या पूरे विश्व की आश्चर्यजनक घटना है। इनमें शांति किसने प्रदान की हुई है।

यहाँ के लोगों से भी मैं मिला। मैं 'इन्डिया वन' सोलर प्लांट में जयसिन्हा भाई के साथ भ्रमण कर रहा था। अपने यहाँ जो बड़ी बिल्डिंग है - आनंद सरोवर है, तपोवन है मैं यहाँ सब तरफ गया। लोगों से बात भी की और प्लांट में जो प्रमुख व्यक्ति है, जो इन सबको देख रहे हैं तो मैंने पूछा कि आप क्या करते हो? तो बोले इनको देखता हूँ, तो मैंने कहा आप तो यहाँ बड़ा काम कर रहे हैं, तो कहा मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ, तो फिर मैंने पूछा तो फिर कौन कर रहा है? तो बोले बाबा कर रहा है।

यहाँ जो पत्रिका निकलती है उनके सम्पादक महोदय से बात हुई। मैंने कहा कि आप बहुत अच्छा प्रकाशन

रहे हैं, आप तो गजब का काम कर रहे हैं तो उन्होंने भी यही कहा कि मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ, वो तो बाबा कर रहा है। यहाँ दूध विभाग में गया, उनसे मिला और उनको कहा कि आप कैसे मैनेज करते हैं, इतने लोगों को? किसको छछा चाहिए, किसी को चाय, किसी को दूध, किसी को आईसक्रीम चाहिए यह तो बड़ा मुश्किल काम है तो बोले मैं कुछ नहीं करता हूँ, बाबा करता है। सारे जिन पर विशेष दायित्व है, वह सारे के सारे विनम्र दिखाई दिये हैं। इतने विनम्र कि इनके पास अहंकार नाम की चीज ही नहीं। इतने झुके हुए हैं तो मुझे लगा कि इतने झुके क्यों हैं! मैं दादी जानकी जी के निवास स्थान पर भी गया था। और वहाँ हंसा बहन जी मिली तो उसने कहा कि दादी जी कहती हैं 'झुक-झुक' माना कि विनम्र बनो, मितव्ययी बनो, फिजूल खर्च मत करो। तो उनका जो शब्द सुना था झुक माना विनम्र बनो और विनम्र कौन व्यक्ति बनता है जिस वृक्ष पर फल आता है तो वह वृक्ष



लुधियाना-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज एवं एलएमए के संयुक्त तत्वाधान में पार्क प्लाजा में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट एंड द आर्ट ऑफ इनफ्ल्यूएंसिंग' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. गिरीश डी.पटेल। कार्यक्रम में लगभग 250 टॉप मैनेजमेंट पर्सन्स शामिल रहे।



दिल्ली-दिलशाद गार्डन। ब्रह्माकुमारीज द्वारा जीटीबी हॉस्पिटल में आज्ञादी के अमृत महोत्सव के तहत आयोजित 'मेरा भारत स्वस्थ भारत' अभियान के कार्यक्रम में डॉ. एस.गिरि, मेडिकल डायरेक्टर, जीटीबी हॉस्पिटल, एनसीटी ऑफ दिल्ली, दिलशाद गार्डन को वच्ची बैज लगाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. नीता बहन।



कोटा-राज। जिला कलेक्टर हरिमोहन मीणा को ईश्वरीय सौगात एवं प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. उर्मिला दीदी।



दातापन और रहमदिल से प्रकृतिजीत स्थिति

है। शक्तियों की बहुत बड़ी बात है। वो सर्वशक्तिवान, उसकी बहुत सारी शक्तियां हमारे अन्दर हैं। हम यह बात बहुत सुनाते आये हैं लोगों को लेकिन इस बात को गहराई से रियलाइज करने में हमें भी बहुत समय लगा था। मधुबन में आकर भी बाबा बताते थे, लेकिन आत्मा उस चीज को ठीक से समझ ले उसमें समय लगता है। बाबा कहते रहते थे कि मैंने सारी शक्तियां तुम्हें दे दी हैं लेकिन हमारे अन्दर यह बात उतरती नहीं थी। हम अब यह चाहते हैं कि आप सभी इसको जल्दी से जल्दी स्वीकार कर लें। बाबा ने हमें

कहते हैं। यह हम सबके चारों ओर है, पर है उतना बड़ा जितना हम यह अभ्यास करेंगे।

हम दाता के बच्चे दाता हैं। हमें क्या-क्या देना है संसार को? एक तो आप में से वो आत्मार्थे जो बहुत अच्छा स्वमान का अभ्यास करते हैं, जो बहुत पवित्र हैं, जो बहुत अच्छे योगी हैं, उन्हें अब से ही संसार को साकाश बहुत देनी है। दाता बनना है। बाबा कहा करते थे हमें याद है, शुरू में ही हमें कहा, तब तो हमें इतना ज़्यादा पता नहीं था जब किचन में आये। बाबा कहते थे, जैसे भोलेनाथ का भण्डारा अखुट गाया जाता है, तुम्हारा भी अखुट दान चलता रहे। उन दिनों ज़्यादा ये बातें प्रकाश में नहीं थीं लेकिन धीरे-धीरे समझ में आया कि हमें निरंतर संसार को देना है। हमारे गुण ऐसे हों, हमारी भावनायें ऐसी हों, हमारे वायब्रेन्स ऐसे हों, हमारा स्वमान और योग ऐसा हो जो निरंतर हम सबको देते चलें। थोड़ी बातें उनमें से अगर हम अभ्यास करते हैं, शान्ति के सागर की शान्ति की किरणें मुझे मिल रही हैं, तो हमसे संसार को शान्ति पहुंचती रहती है ऑटोमेटिक। कुछ करना नहीं है, खुद-ब-खुद। अगर हम अशरीरी बनने का अभ्यास करते हैं तो।

जब हम संकल्प करते हैं कि मैं बहुत शक्तिशाली हूँ या मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ तो हमारे चारों ओर शक्तियों का आभामंडल बन जाता है। जानते हो न आभामंडल क्या होता है? हमारे चारों ओर शक्तियों का घेरा। जो जितना शक्तिशाली बनेंगे उसका आभामंडल दूर-दूर तक बनेगा, संसार तक फैलेगा।

बाबा के महावाक्य हैं याद रखना, जब तुम अशरीरी होते हो तो विश्व को शान्ति का दान मिलता है। और जब स्वदर्शन चक्रधारी होते हो तब विश्व को सुखों का दान मिलता है। सुख और शान्ति दोनों गुह्य बातें हो गईं। स्वदर्शन चक्र माना पाँच स्वरूपों का अभ्यास, यह देने का स्वरूप है। अगर हम बहुत पवित्र होते जा रहे हैं, पवित्रता में एक बात जरूर जोड़ लेनी है कि व्यर्थ संकल्पों से मुक्त आत्मा ही परम पवित्र है। ब्रह्मचर्य के बाद किसी भी तरह का व्यर्थ हमारे पवित्रता के तेज को धुमिल कर देता है। अगर हम ऐसे अच्छे पवित्र हैं तो हमसे ऑटोमेटिक प्रकृति को पवित्रता का दान मिलता जाता है। अगर हम इस स्वमान में हैं कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ तो अनेक निर्बल आत्माओं को शक्तियां मिलती रहेंगी, आपके घर में शक्तियां फैलती रहेंगी। सभी को अपने घरों को चार्ज कर देना है।

दाता पन और रहम से प्रकृति जीत भवः। रहम तो मनुष्य की एक नैचुरल प्रवृत्ति है। बस इतना है कि कोई केवल अपनों पर रहम करता है और कोई सब पर। हम सभी बाबा के बच्चे, देखो, जिसका जो बच्चा होता है कलयुग के अन्त तक भी माँ-बाप के कुछ न कुछ गुण बच्चों में अवश्य आते हैं। सारे नहीं, बाकी तो पूर्वजन्मों से अपने ही लेकर आते हैं। हम भगवान के बच्चे हैं, यह चिंतन करेंगे सभी। हैं या नहीं पढ़ने की तो बात नहीं है। यह तो सब जो ज्ञान में नहीं हैं वो भी उत्तर देते हैं हम भगवान के बच्चे हैं। तो उसके गुण हमारे में कई सारे हैं। सब आज देख लें कौन-कौन से हैं। हम ज़्यादा गुणों की चर्चा नहीं करेंगे उसके क्योंकि सभी जानते तो हैं कि उसके गुण कितने हैं! वो सुख दाता है, मैं क्या हूँ? होना चाहिए ये या नहीं! चेक करेंगे मैं क्या हूँ। एक समझदार और बुद्धिमान ज्ञानी वही है जो अपनी कमियों को भी जानते हों और महानताओं को भी। अगर केवल कमी जानेंगे तो निराश रहेंगे, महानतायें भी यानी स्वमान भी।

हम एक जगह गये थे जोधपुर में ट्रीटमेंट के लिये जो हाथ से करते हैं, जिसे ऑस्टियोपैथी कहते हैं। जो हमारा कर रहा था वो कहने लगा कि मैं आपकी क्लास बहुत सुनता हूँ, मुझे स्वमान बहुत पसंद आये। अभी उसे ज्ञान नहीं है। मैं सोचने लगा कि इसने स्वमान की बात समझ ली! तो दुनिया वाले भी जो देवकूल की आत्मार्थे हैं सब, वो अब बाबा की बातों को समझने लगी हैं। तो पूछेंगे अपने से कि मैं शिवबाबा की सन्तान, वो दुःखों को हरने वाला, मैं क्या हूँ? वो शान्ति का सागर, मैं क्या हूँ? यह नहीं मैं शान्त स्वरूप हूँ, वो बात हम नहीं कर रहे हैं। मैं क्या हूँ, मैं शान्ति में हूँ या नहीं? वो प्यार का सागर, मैं प्यार देता हूँ, देती हूँ? चेक करेंगे।

अपनी बहुत सारी शक्तियां दी हुई हैं। हम बहुत शक्तिशाली हैं। और जो योग करते हैं, कॉमेन्ट्री से अमृतवेले कराते भी हैं, वैसे भी एक चीज बहुत अभ्यास में लानी है, और वो है जब हम संकल्प करते हैं कि मैं बहुत शक्तिशाली हूँ या मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ तो हमारे चारों ओर शक्तियों का आभामंडल बन जाता है। जानते हो न आभामंडल क्या होता है? हमारे चारों ओर शक्तियों का घेरा। जो जितना शक्तिशाली बनेंगे उसका आभामंडल दूर-दूर तक बनेगा, संसार तक फैलेगा। तो यह अभ्यास भी सबको दो बार बस, ज़्यादा नहीं, रोज़ दो बार कभी भी अवश्य करना है। मैं बहुत शक्तिशाली हूँ। मेरे चारों ओर शक्तियों का आभामंडल है, प्रभामंडल, इंग्लिश में और



अमृतसर-पंजाब। अमृतसर एयरपोर्ट के पर्सनल असिस्टेंट हजारी कुमार से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय उपहार भेंट कर सम्मानित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन। साथ हैं स्टेट बैंक की संगीता सेठ तथा प्रतीक्षा कुमारी। इस मौके पर ब्र.कु. आशुतोष भाई, मा.आबू भी उपस्थित रहे।



फरीदाबाद-संजय एन्क्लेव (हरियाणा)। बच्चों के व्यक्ति विकास हेतु ब्रह्माकुमारी द्वारा आयोजित पाँच दिवसीय 'समर कैम्प' के दौरान समूह चित्र में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. शोभा बहन, ब्र.कु. वंदना बहन, ब्र.कु. श्वेता बहन, प्रतिभागी बच्चे तथा उनके अभिभावक गण।



गाज़ियाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारी द्वारा गुलमोहर गार्डन टावर, राज नगर एक्सप्लेंशन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मोहन नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लवली बहन, ब्र.कु. रुपा बहन, योगा ट्रेनर उमा बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित सोसाइटी निवासी भाई-बहनों शामिल रहे।



सादड़ी-राज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में पतंजलि योगाचार्य गणपत भाई तथा मदन भाई योगा कराते हुए। साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुचिता बहन तथा अन्य भाई-बहनों।



सम्बलपुर-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बलपुर वन मण्डल अधिकारी विश्वनाथ नीलानाम्बर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. पार्वती दीदी। कार्यक्रम में सम्बलपुर विश्वविद्यालय के कुल-सचिव प्रो. संजीव मित्तल, प्रो. प्रकाश, ब्र.कु. दीपा बहन, ब्र.कु. आरती बहन, अनुपमा बहन सहित अन्य भाई-बहनों उपस्थित रहे।



दिल्ली-डिफेन्स कॉलोनी। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारी के 'कल्प तरु' प्रोजेक्ट के अंतर्गत डिफेन्स कॉलोनी वेलफेयर एसोसिएशन क्लब तथा ब्रह्माकुमारी के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में क्षेत्र के विधायक मदनलाल जी, डीसीडब्ल्यूए के अध्यक्ष मेजर रणजीत सिंह, पूर्व सांसद डॉ. बी.एल. शैलेश, कर्नल कवलजीत सिंह आहलुवालिया, एसआईडीबीआई के डायरेक्टर नवीन मैनी, कैप्टन प्रेम रेवारी, डॉ. हरीश वाधवा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रभा दीदी, ब्र.कु. एकता बहन, ब्र.कु. अनु बहन, ब्र.कु. अनुज भाई तथा अन्य भाई-बहनों उपस्थित रहे।



सीवान-बिहार। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारी के 'दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, माउण्ट आबू, एसडीओ राम बाबू बैठा, पूर्व चेयरमैन श्रीमति कृष्णा देवी, पूर्व चेयरमैन श्रीमति अनुराधा देवी, डॉ. आशुतोष कुमार सिंह, ब्र.कु. सुधा बहन, ब्र.कु. किरन बहन, ब्र.कु. रिकी बहन तथा अन्य।



पिथौरागढ़-उत्तराखण्ड। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर एशियन एकेडमी स्कूल में ब्रह्माकुमारी को आमंत्रित किये जाने पर आयोजित कार्यक्रम में एशियन एकेडमी स्कूल के डायरेक्टर महामण्डलेश्वर श्री श्री 1008 विरेन्द्रानन्द जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. कनिका बहन। साथ हैं योगा एक्सपर्ट बलराम तनरंजा, मुम्बई, ब्र.कु. अशोक गाबा तथा अन्य।



बाढ़-बिहार। ब्रह्माकुमारी द्वारा राष्ट्रीय डॉक्टरों दिवस के अवसर पर कोविड-19 के समय अपनी अथक सेवायें देने वाले डॉक्टरों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. बी.पी. सिंह, डॉ. नरेश प्रसाद सिंह, डॉ. अरुण शर्मा, डॉ. सियाराम, डॉ. अंजेश, एनटीपीसी डॉ. अरविंद, डॉ. सामंत, डॉ. ज्योत्सना, डॉ. अंकित तथा अन्य डॉक्टरों सहित ब्र.कु. विपिन, ब्र.कु. ज्योति बहन व अन्य भाई-बहनों उपस्थित रहे।



चरखी दादरी-हरियाणा। राष्ट्रीय डॉक्टरों दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित ईसीएचएस के डॉ. कर्नल राजवीर सिंह एवं अन्य स्टाफ को सम्मानित करने के पश्चात् उनके साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता बहन।



सीतापुर-उ.प्र.। पुलिस ट्रेनिंग सेंटर में दीवान से एस.आई. बनने वाले 750 दरोगा पदाधिकारियों को साप्ताहिक कोर्स कराते हुए ब्र.कु. योगेश्वरी बहन।

